INTERNATIONAL JOURNAL OF
ADVANCED INNOVATION AND RESEARCH
journal homepage: www.ijair.in

1857 Eesavee kee Kraanti:Vibhinn Drshtikon

Dr. Raj kumar
Assistant Professor, Hindi, Shaheed Udham Singh Govt. College, Indergarh Road, Matak Majri Indri(Karnal)

Keywords

युगाांतकारी घटना,
भौततक पररवतन,
समसामतयक पररवेश,
उपागम,
औपतनवेतशक,

ABSTRACT

भारतीय राष्ट्र ीय आांदोलन में 1857 ईसवी के क्ाांतत एक युगाांतकारी घटना मानी जाती है तजसमें तितटश अतधकाररयों के तवरुद्ध तवरोध का प्रदशतन भारतीय जनता द्वारा एकजुट होकर प्रदतशतत होता है। लांबे समय से चली आ रही भारतीयों में असांतोष की भावना सरकार के
तवरुद्ध उभर कर आई।

विषय प्रस्तुती:- राज्य का तनमातण भावनाओां, वफादारी, आत्मतहत और बल से होता है लेतकन तकनीकी और भौततक पररवतन तनणतयकारी होते हैं तकां तु उनका प्रभाव इस बात पर तनभतर करता है तक लोग स्वयां को एवां अपने सम्मितलत होने के क्षमता को तकस प्रकार पररभातषत करते हैं। राष्ट्र तवकतसत होते हैं न केवल पूांजीवाद के तकत से बम्मि प्रततरोध तवद्रोह एवां कानून से, जो तवचारों और अनुभवों की अतभव्यम्मि है।

1857ई.में उत्तरी और मध्य भारत में घतटत घटनाओां को लेकर इस प्रकार का एक तवरोध हुआ तजसे तसपाही तवद्रोह की सांज्ञा दी गई लेतकन कुछ इततहासकार इसे 'जन आांदोलन' के रूप में देखने हैं। इस घटना को अनेक तवद्वानों ने अलग-अलग ढां ग दृतष्ट्कोणों से वतणतत तकया है।एररक स्टोक्स ने तकतदया है तक 1857 ईसवी का तवद्रोह एक नहीां बम्मि कई तवद्रोहों का समावेश था। अतः इसे तकसी एक पररभाषा में बाांधना उतचत प्रतीत नहीां होता। अथातत 1857 तवतभन्न तवद्रोहों को तवतभन्न तरीके से पररभातषत तकया जा सकता है। तवतभन्न पररभाषाएां तवतभन्न अथों का सांकेत देती है, तजन्हें हम ऐततहातसक घटनाओां से जोड़ना चाहते हैं। एक ही ऐततहातसक घटना से अलग-अलग सामातजक समूह अलग-अलग अथत जोड़ने का प्रयास इसतलए करते हैं क्ाांतक नया अथत समसामतयक पररवेश में उन सामातजक समूहों की पहचान तय करता है तथा यह पहचानना उनके वततमान काल की जरूरतों को पूरा करने का माध्यम बनता है।*1 तपछले 150 वषों में 1857 ईसवी की ऐततहातसक घटनाओां के लगभग प्रत्येक पहलू पर तवचार तवमशत तकया गया है। वततमान काल की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उन्हें पुनः कम्मित एवां पुनः पररभातषत करने का प्रयास भी तकया गया है। पररणामस्वरूप 1857 ई. के इततहास की व्याख्या करने वाले कई उपागम (Approach) या दृतष्ट्कोण उभर कर सामने आए हैं, तजन्हें मोटे तौर पर सात भागों में बाांटा जा सकता है- तजनमें मुख्य रूप से औपतनवेतशक उपागम, राष्ट्र वादी उपागम, माक्सतवादी उपागम,अतभजात वगीय उपागम, तनम्न वगीय उपागम, दतलत उपागम एवां नारीवादी उपागम है।
s

1857ई. का विद्रोह और विविन्न उपागम (Approach):-

औपवििेविक उपागम :- औपतनवेतशक उपागम के अनुसार 1857 ईसवी का तवद्रोह कुछ तबखरे हुए कुछ कमजोर तवद्रोहोां का समूह था तजसमें राष्ट्र वादी चररत्र की अनुपम्मथथतत थी, अथातत 1857 का तवद्रोह राष्ट्र वाद की तवचारधारा से प्रेररत नही ां था। उसका उद्देश्य है भारतीय राष्ट्र राज्य का तनमातण करना नही ां था। वह मुगल साम्राज्य को पुन: थथातपत करने का एक मुसलमानी षड्यांत्र था अथवा पुराने सामांती तत्ोां द्वारा सांचातलत एक तहांदू आांदोलन था। पीटर रॉब के अनुसार वह मुख्यतः एक 'तसपाही तवद्रोह' था तजससे कालाांतर में आम नागररक भी जुड़ गए क्ोांतक वे बदतर कानून व्यवथथा
का लाभ उठा सकते थे। चार्ल्ट बॉल, जॉन केई और जॉजत टेरवेल्यान के द्दतष्ट्कोण से 1857 का इततहास तवद्रोह के दमन का इततहास था,जो अांग्रेजी नस्ल के साहस को प्रमातणत करता था। जेम्स स्टीफन ने 1857ई. की घटना को एक ऐसे सबूत के रूप में प्रस्तुत तकया जो तसद्ध करता था तक भारतवातसयोां में सुधार का सामर्थ्ट में होने के कारण भारत के तवकास हेतु अांग्रेजी साम्राज्य की उपम्मथथतत अतनवायत थी।*2 थामस मटकॉफ ने स्वीकार तकया तक 1857 का तवद्रोह तसपाही तवद्रोह से कहीां अतधक परां तु राष्ट्र ीय आांदोलन से कुछ कम था। उनका दावा था तक तवद्रोह के नेतागण पराजय में तो एकजुट थे तकां तु तवजयी होने पर एक दूसरे के दुश्मन बन सकते थे।* 3 तनष्कषतत: यह कहा जा सकता है तक साम्राज्यवादी उपागम के अनुसार 1857 के तवद्रोही 'तवतभन्न तनजी तहतोां से प्रेररत होकर तवद्रोह पर तो उतर आए थे',तकां तु उनके समक्ष अांग्रेजी साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने तथा एकीकृत भारतीय राष्ट्र तनमातण का न तो लक्ष्य था और न ही इस प्रकार के लक्ष्य प्राम्मि की कोई योजना थी।

राष्ट्र िादी उपागम:- राष्ट्र वादी उपागम या द्दतष्ट्कोण के अनुसार 1857 का तवद्रोह आधुतनक भारतीय राष्ट्र के राज्य के उद्भव की तदशा में महत्पूणत चरण था। औपतनवेतशक उपागम के ठीक तवपरीत राष्ट्र वादी उपागम के अनुसार 1857 का तवद्रोह राष्ट्र की भावना से ओतप्रोत था। उसका परम लक्ष्य भारत को अांग्रेजी तशकांजे से **मुि** करना तथा उसे एक स्वतांत्र एवां सांप्रभु राष्ट्र के **रूप** में थथातपत करना था। वीर सावरकर ने 1857 की घटना को 'भारतीय स्वतांत्रता का प्रथम सांग्राम' कहा है। उनकी मान्यता के अनुसार 1857 ईसवी का तवद्रोह भारत के म्मखलाफ अतीत में तकए गए अन्याय का पररणाम था। बेंजातमन तडजरैली प् तथा कालत माक्सत जैसे तचांतकों ने भी 'तसपाही तवद्रोह' में 'राष्ट्र ीय तवद्रोह' के तत्ोां
को देखा था। 1944 ईस्वी में भारतीय राष्ट्र ीय सेना को सांगतठत करते समय सुभाष चांद्र बोस ने भी यह आशा **व्यि** की थी तक वह 1857 की पराजय का बदला लेंगें।*3 1857 के तवद्रोह की 150 वी ां वषतगाांठ पर भारतीय सांसद द्वारा उसे सरकारी स्वरूप में सरकारी **रूप** से स्वतांत्रता का प्रथम युद्ध घोतषत करना उसके राष्ट्र वादी स्वरूप की पुतष्ट् करता है।

मार्क्सािदी द्दवष्ट्कोण:- माक्सतवादी द्दतष्ट्कोण के अनुसार 1857 के तवद्रोह को सांपूणत आधुतनक अथत में राष्ट्र वादी नही ां माना जा सकता। हालाांतक तवद्रोह में तवदेशी तवरोधी सांवेदना थी तकां तु राज्योां के सरां क्षण की नवीन नीतत पर गहरी तचांता **व्यि** करते हुए कालत माक्सत ने तलखा है तक तजन दशाओां के अांतगतत सामांती राज्योां को स्वतांत्र रहने की अनुमतत दी जा रही है, वहीां दशाएां भारत की प्रगतत में बाधक है।*4 रजवाड़े अांग्रेजी व्यवथथा को कायम रखने वाले गढ़ हैं तथा भारतीय तवकास के मागत में सबसे बड़ी रुकावट है।

माक्सत के अनुसार अांग्रेजोां ने तहांदुस्तान में इतनी बड़ी फौज पहले कभी केंतद्रत नही ां की थी। वह फौज हर तरफ तबखरी हुई थी। माक्सत ने एक और तो अांग्रेजोां की सैतनक म्मथथतत की इस कमजोरी की तरफ सांकेत तकया है तक उन्हें फौज तबखरा कर रखनी पड़ती है, दूसरी और तदखाया तक अगर

राजथथान और महाराष्ट्र में सांघषत जोर पकड़ा तो उनकी म्मथथतत और भी सांकटमय हो सकती है। माक्सत ने इस सांभावना का इस तरह उल्लेख तकया था तक मानो वे चाहते हो तक वहाां सांघषत फैले।*5

रामतवलास शमात ने अपनी पुस्तक सन सत्तावन की राज्यक्ािांतत और माक्सतवाद (1990) में माक्सत के लेखोां पर प्रकाश डाला है। उन लेखोां में तबहार के छापामारोां का हवाला देने के बाद माक्सत ने तलखा "अवध और रूहेलखांड के तवद्रोतहयोां के साथ इनकी कायतनीतत की समानता स्पष्ट है" उन्होांने यह तथ्य लोगोां के सामने रखा तक सांघषत एक बड़े पैमाने पर चल रहा था। तहमालय से लेकर तबहार और तवांध्याचल तक और ग्वातलयर तथा तदल्ली से लेकर गोरखपुर और दीनापुर तक सारे प्रदेश सतक्य तवद्रोही समूहोां से भरे पड़े थे। वे लोग साल भर के युद्ध के अनुभव के बल पर एक हद तक सांगतठत थे। कई बार हारने पर भी इस बात से उत्सातहत होते थे तक लड़ाई तनणातयक नहीां होती थी और अांग्रेजोां को बहुत थोड़ा लाभ होता था। हालाांतक माक्सतवादी उपागम 1857 के तवद्रोह को राष्ट्रीय एकीकरण की तदशा में तकया गया लोकताांतत्रक प्रयास नहीां मानता तकांतु यह स्वीकार करता है तक इसके द्वारा अांग्रेजोां को दी गई साहस पूणत चुनौती देशभम्मि की प्रेरणा का स्रोत बनी। ए.आर. देसाई का कथन है तक कुछ आताांकवातदयोां एवां चरम वामपांथी राष्ट्रवादी राष्ट्रवातदयोां ने 1857 ईसवी के तवद्रोह को भावी सफल स्वतांत्रता सांग्राम की पूवत तैयारी के रूप में देखा।*6

अविजातिगीय उपागम:- अतभजातवगीय उपागम के अनुसार1857 का तवद्रोह उच्च एवां कुलीन वगों, रजवाड़ोां, तालुकदारोां एवां सामांती बुम्मद्धजीतवयोां द्वारा सांचातलत था। तवद्रोह में आम जनता की सतक्यता न होने के कारण उसकी प्रशासतनक नीततयोां उनके पारां पररक लाभप्रद म्मथथतत के तलए खतरा थी। सब्यसाची दासगुिा ने यह तकत तदया है तक तवद्रोह में भाग लेने वाले तकसान भी 'वदीधारी तसपाही' थे तथा वदी ने तकसानोां को भारतीय समाज के नए बुम्मद्धजीतवयोां में पररणत कर तदया था। तवद्रोह के द्वारा वदीधारी तकसान भारत में तवद्यमान शम्मि के पारां पररक पदसोपान के अांतगतत अपने तलए स्वायत्त थथान तनतमतत कर रहे थे। हालाांतक एररक स्टोक्स एवां जुतडथ िाउन जैसे इततहासकारोां ने ग्रामीण तवद्रोह के अभीजातीय चररत्र को तववादास्पद बताया है। उनके कथा अनुसार नाना सातहब एवां झाांसी की रानी जैसे पुराने सामांती तत्ोां को तसपातहयोां के खास आग्रह पर तवद्रोह में सतक्य होना पड़ा। मुखजी ने बताया है तक अवध के ताल्लुकदारोां को भी तकसानोां एवां तशिकारोां के अनुरोध एवां तजद्द से मजबूर होकर तवद्रोह में तहस्सा लेना पड़ा। रामतवलास शमात ने भी तवद्रोह के लोकताांतत्रक चररत्र पर बल देते हुए यह उजागर तकया तक बहुसांख्यक आधुतनक बुम्मद्धजीतवयोां ने तवद्रोह का समथतन नहीां तकया क्ोांतक पाश्चात्य तवचारोां से प्रभातवत होने के कारण वह तवद्रोह को अपने वैतिक दृतष्टकोण से देखते थे।*7

विम्निगीय उपागम :- तनम्नवगीय उपागम का तवकास अतभजातवगीय उपागम के म्मखलाफ प्रतततक्या के रूप में हुआ। इसके अनुसार 1857 का तवद्रोह भारत की उच्च वगों की नहीां बम्मि आम जनता, ग्रामीण तकसानोां, तशिकारोां, मजदूरोां एवां तसपातहयोां की पहल का पररणाम था। रूद्राांगशु मुखजी ने तवद्रोह में तहस्सा लेने वाले तसपातहयोां को वदीधारी तकसान की सांज्ञा दी है जो तवद्रोह के दौरान वदी का त्याग कर साधारण तकसानोां में घुल तमल गए थे। इस दृतष्ट से 1857 का तवद्रोह ओपतनवेतशक काल के 'तकसान तवद्रोह' के सभी लक्षणोां से पररपूणत था। वह एक सुतनयोतजत तवद्रोह था तजसमें पांचायतोां द्वारा तनणतय-तनमातण की प्रतक्या का स्पष्ट प्रावधान था। उसका लक्ष्य वचतस्व प्राि वगों एवां उनकी सांपतत्त को तवतनष्ट करना था। अतः तवद्रोह के दौरान जनसाधारण ने अांग्रेजोां के साथ साथ ईसाई धमत को मानने वाले भारतीयोां तथा अांग्रेजी जीवन पद्धतत को अपनाने वाले बांगाली बाबूओां पर भी हमला तकया। इस सांदभत में कानपुर के सटीचौरा घाट एवां बीवीघुर हत्याकाांड उल्लेखनीय हैं। तनष्कषतत: तनम्नवगीय उपागम के अनुसार 1857 का तवद्रोह जन आांदोलन था तजसमें आम जनता ने ओपतनवेतशक एवां भारतीय उच्च वगीय शोषकोां सम्मितलत सत्ता के म्मखलाफ आवाज उठाई।*8

दवित उपागम:- दतलत उपागम 1857 के तवद्रोह के राष्ट्र वादी स्वरूप को तो स्वीकार करता है लेतकन राष्ट्र के वचतस्ववादी तनमातण को चुनौती देते हुए दतलतों की महत्पूणत भूतमका पर बल देता है। चारू **गुि ा** एवां बद्रीनारायण ने यह प्रदतशतत तकया है तक दतलत उपागम क्षेत्रीय मौम्मखक परां परा से अपने नायक एवां नातयकाओां जैसे झलकारी बाई और मातादीन भांगी का आतवष्कार करता है जो ने तृत्त्व 1857 के तवद्रोह में दतलतों का प्रततततनतधत् करते हैं। लता तसांह ने तवद्रोह में लखनऊ और कानपुर की दातसयों की राष्ट्र ीय चेतना पर आधाररत सहभातगता के तवषय में जानकारी दी है। रोचना मजूमदार और दीपेश चक्रती ने 'मांगल पाांडे' जैसे चलतचत्र का तवश्लेषण करते हुए तवद्रोह में बैरकपुर
की कारतूस तमल में कायतरत अछूत कमतचाररयों की अहम भूतमका को स्पष्ट् तकया है। शशाांक तसांन्हा ने तवद्रोह मे छोटा नागपुर के आतदवातसयों के योगदान पर प्रकाश डाला है। जो अ ां ग्रेजों द्वारा अपने जादू टोने की साांस्कृततक प्रथा पर प्रततबांध लगाए जाने के म्मखलाफ थे।*9

ि ारीि ादी उपागम :- 1857 ईसवी के तवद्रोह में मतहलाओां की तवशेष भूतमका पर प्रकाश डालता है तथा यह स्पष्ट् करने की कोतशश करता है तक तवद्रोह के पश्चात पुरुषों तथा स्त्रीत् की अवधारणा में पररवततन आया। दतलत वीराांगनाओां की कहातनयाां 1857 के इततहास की उस अतभजातीय व्याख्या को चुनौती देती है तजसमें साधारण मतहलाओां को नजरअ ां दाज तकया गया है। माइकल तफशर ने दशातया है तक 1857 के तवद्रोह के पश्चात भारतीय पुरुषों की एक धूतमल छतव तवकतसत हुई तजसके फलस्वरूप लांदन में भारतीय पुरुषों के साथ अ ां ग्रेजों के सौहादतपूणत व्यवहार में पररवततन आया। जेन रॉतबांसन ने अ ां ग्रेजी मेंमसातहबों एवां उनके भारतीय सेवकों के मध्य पनपने वाले अतविास की चचात की है। तवद्रोह के दौरान अ ां ग्रेजी मतहलाएां भी भारतवातसयों की तहांसा का तशकार हुई थी।*10
अतः तवद्रोह के उपराांत अ ां ग्रेजी स्त्रीत् अ ां ग्रेजी शुद्धता का प्रतीक बन गया। ऐियात लक्ष्मी ने भारत के 'नारीवादी घरेलू थथान' एवां तिटेन के 'पुरुषवादी ओपतनवेतशक स्वामी' के बीच असमान शम्मि के साांबांध में उजागर तकया है। इांद्रानी सेन ने यह दशातया है तक झाांसी की रानी लक्ष्मीबाई का तचत्रण कुछ अपवादों के बावजूद, तलांग के औपतनवेतशक पररप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए तकया गया है।*11

उपसंहार:- तवतभन्न उपागमों द्वारा 1857 के तवतवध तवश्लेषण से यह ज्ञात होता है तक तवद्रोह के कई सामातजक आधार थे। अन्य शब् ो ां में कहें तो भारतीय समाज के तवतभन्न वगों ने अलग-अलग कारणों से तवद्रोह में तहस्सा तलया तजसे तवद्रोह की प्रकृतत बहुआयामी हो गई तथा उसके दूरगामी पररणाम तदखाई तदए जो तक अ ां ततः तितटश सरकार को भारतीय प्रशासन में अनेक पररवततन करने के तलए मजबूर होना पड़ा।

References

1. स्टोक्स एररक,द पीजेंट आर्मडत :दा इांतडयन ररबेलीयन आफ1857 , कैलेंरेंडन प्रैस, 1986, पृष्ठ 243- 226
2. बांधोपाध्याय, शेखर, एटीथां तफफटी सैवन एां ड इट्स मैनी तहस्टर ीज 1857:ऐसेस फ्रॉम ई.पी.डब्ल्यू .ओररयांट लोांगमैन, 2008पृष्ठ3
3. स्टीफन, जेम्स एफ., "कईज तहस्टर ी ऑफ इांतडयन म्यूतटनी, :"1864, डगलस एम.पीयसत, इांतडया अ ां डर कॉलोतनयल रूल1885-1700 , तपयसतन, पृष्ठ 95
4. मैटकॉफ,थाम्स आर.,दा आफटरमैथ आफ ररवोल्ट,तप्राांस्टन,1965,पृष्ठ61
5. रॉब पीटर, ऑन द रेबेतलयन ऑफ :1857 एस्सेज फ्रॉम ई.पी.डब्ल्यू., ओररयांट लोांगमैन 2008 पृष्ठ64
6. एम्ब्री,ए.टी., 1857इन इांतडया, डी.सी.हीथ कां पनी,1963,पृष्ठ,
7. 41-5
8. रॉतबांसन,जेन एां जेर्ल् ऑफ एम्मियन,1996, पृष्ठ, 54-253बांधोपाध्याय प्रेमाांशु के., तुलसी लीव्स एां ड दा गैंजेस वाटर : द स्लोगन ऑफ द फस्टत तसपॉए म्यूतटनी इन बैरकपुर, के.पी.बागची एां ड कां पनी, 2003
9. तवतपन चन्द्र , मॉडनत इांतडया एन.सी.ई.आर.टी., 1994पृष्ठ, 115
10. इरफान हबीब,"अ ां डरस्टैंतडांग "1857 थव्यासाची भट्टाचायत ,साांपादक ररतथांतकां ग1857 ,ओररयांट लोांगमैन, 2007 पृष्ठ63
11. ए.आर .देसाई, सोशल बैकग्राउांड ऑफ इांतडयन नेशनतलज्म, पापुलर प्रकाशन, 1993, पृष्ठ,313r